वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन - एक रिपोर्ट

परमाणु ऊर्जा विभाग की मुंबई स्थित पाँच इकाइयों (निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय; क्रय एवं भंडार निदेशालय; परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद; भारी पानी बोर्ड तथा विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड) की संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में भारी पानी बोर्ड द्वारा दिनांक 07.08.2024 (बुधवार) को पऊवि कन्वेंशन सेंटर, अणुशक्तिनगर, मुंबई में “पऊवि स्थापना दिवस” के स्मरणोत्सव के अवसर पर हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में पद्मश्री डॉ. आर. बी. ग्रोवर, एमरिटस प्रोफेसर, एच.बी.एन.आई., एवं सदस्य, परमाणु ऊर्जा आयोग, तथा डॉ. ए.के. त्यागी, संकायाध्यक्ष, एचबीएनआई को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर पाँचों इकाइयों के कार्यालय प्रधान भी उपस्थित थे।

मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत हुई। श्रीमती अनुराधा दोड़के,उप निदेशक (राभा), निसेसंप्रनि ने अपने स्वागत संबोधन के द्वारा कार्यक्रम में आमंत्रित विशिष्ट वक्ताओं, पाँचों इकाइयों के कार्यालय प्रधान तथा सभी श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर उपस्थित श्री अचलेश्वर सिंह, निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग का अभिनंदन किया गया।

भारी पानी बोर्ड के मुख्य कार्यकारी श्री एस. सत्यकुमार की अनुपस्थिति में भारी पानी बोर्ड का प्रतिनिधित्व कर रहें श्री मोहम्मद यासीन , निदेशक (तकनीकी), भारी पानी बोर्ड ने अपने संबोधन में त्रिचरणीय नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम की सफलता में भारी पानी की अहम भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि औद्योगिक स्तर पर भारी पानी का उत्पादन भारत के आत्मनिर्भरता की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम है। उन्होंने स्क्रैप से कोबाल्ट, निकेल और मोलिब्डेनम का निष्कर्षण, बेयर लिकर से गैलियम की पुनर्प्राप्ति और उर्वरक इकाई पर्ज गैस स्ट्रीम से

हीलियम की पुनर्प्राप्ति आदि जैसी भारी पानी बोर्ड की नई विकासात्मक गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की तथा दृढ़ संकल्प, समर्पण, नवीनता और उद्देश्य की साझा भावना के साथ आगे बढ़ने की बात पर ज़ोर दिया।

श्री के. महापात्रा, निदेशक, निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय ने अपने संबोधन में संयुक्त समन्वय समिति द्वारा किए गए विविध कार्यों की सराहना की। साथ ही, उन्होंने हिंदी में कार्य करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला और सभी को हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में हो रहे आयोजनों ने उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप वे किसी भी समारोह में अपना संबोधन हिंदी में ही प्रस्तुत करते है।

श्री प्रदीप मुखर्जी, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी, विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड ने अपने संबोधन में ब्रिट के इतिहास के साथ-साथ वर्तमान पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने रेडियो आइसोटोप के सामाजिक उपयोग पर प्रकाश डालते हुए स्वास्थ्य सेवा , कृषि, उद्योग एवं अनुसंधान के क्षेत्र में रेडियो आइसोटोप की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कैंसर थेरेपी के लिए कारगर कोबाल्ट-60 के उत्पादन तथा मेडिकल सेक्रेटोन के निर्यात की भूमिका की चर्चा की।

श्री वेद सिंह, निदेशक, क्रय एवं भंडार निदेशालय ने अपने संबोधन में कहा कि परमाणु ऊर्जा विभाग के पास परमाणु ऊर्जा प्रौद्योगिकी के विकास का जनादेश है, जिसमें यूरेनियम संसाधनों और परमाणु खनिजों की खोज, पहचान और प्रसंस्करण, परमाणु ईंधन का निर्माण, भारी पानी का उत्पादन, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण और प्रचालन, परमाणु ईंधन पुनर्संसाधन और अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं। परमाणु ऊर्जा विभाग राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक विषयों में भी अनुसंधान कार्य कर रहा है तथा देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की राह को मजबूत आधार प्रदान कर रहा है।

श्री डी. के. शुक्ला, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद ने अपने संबोधन में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का कथन उद्धृत करते हुए कहा कि जिस प्रकार हिंदी भाषा ने साहित्य की भाषा बनने की पूर्ण क्षमता विकसित की उसी प्रकार हिंदी भाषा में विज्ञान की भाषा बनने की भी पूर्ण सामर्थ्य है। इसके लिए जो भी आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है, वह हमें उठाना चाहिए। उन्होंने हिंदी भाषा में वैज्ञानिक शब्दावलियों का सृजन तथा उसके इष्टतम उपयोग पर भी बल दिया। उन्होंने आज के समय में वैज्ञानिक संगोष्ठी के प्रयोजन एवं प्रायोजन की प्रासंगिकता की प्रशंसा की।

श्री के. स्वामीनाथन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं अध्यक्ष, संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति द्वारा मंचासीन अतिथियों को संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति की ओर से भेंट स्वरूप स्मृति चिह्न एवं पुस्तक प्रदान किए गए।

प्रथम विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. ए. के. त्यागी, डीन, एचबीएनआई ने **"राष्ट्र के निर्माण में परमाणु"** विषय पर रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार 30-40 के दशक में द्वितीय विश्व शुरू होने के कारण डॉ. होमी जहांगीर भाभा अपनी उच्च शिक्षा पूरी करने के लिए वापस UK नहीं जा पाए और भारतीय विज्ञान संस्थान में डॉ. सी.वी. रमण के नेतृत्व में पहले अध्यापन का कार्य शुरू किया और आगे चलकर उनके सहयोग से परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में शोध की दिशा में पहला कदम बढ़ाया। आगे उन्होंने अपने वक्तव्य में श्रोताओं को अवगत कराया कि आजादी के पश्चात प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में तीन सदस्यों की परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष डॉ. होमी जहांगीर भाभा थे। और इस प्रकार अगस्त, 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की औपचारिक स्थापना के साथ ही भारत में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव पड़ी और तब से लेकर आज तक दो सफल परमाणु परीक्षण के अलावा DHRUVA, FBTR, KAMINI के रूप में परमाणु ऊर्जा के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण के अनुसंधान रिएक्टर, ब्रिट, भापाबो जैसे संस्थानों की स्थापना पीएफबीआर कल्पाक्कम में कोर लोडिंग जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हम हासिल कर चुके हैं। ए.एम.डी की स्थापना कर हम भारत भर में उपलब्ध यूरेनियम के विशाल भंडार का पता लग रहे हैं। आज भारत में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम देशव्यापी स्तर पर समृद्ध हो रहा है और देश भर में 131 स्थानों पर इसके कुल 33 संस्थान परमाणु ऊर्जा के अनुसंधान एवं विकास कार्यों में अपना योगदान दे रहे हैं।

डॉ. आर. बी. ग्रोवर, एमरिटस प्रोफेसर, एचबीएनआई ने **"ऊर्जा का महत्त्व तथा विभिन्न स्रोतों के मिश्रण में नाभिकीय ऊर्जा की भूमिका"** पर सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने मानव विकास सूचकांक (HDI) के विकास में ऊर्जा की भूमिका को चार्ट के माध्यम से बेहद रोचक तरीके से बताया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि किस प्रकार यूरोप में औद्योगिक क्रांति एवं विश्व की बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप 19वीं शताब्दी में भाप इंजन के विकास से लेकर आज के समय में परमाणु ऊर्जा के साथ-साथ ऊर्जा के अन्य नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय स्रोतों के विकास के माध्यम से हमारी ऊर्जा जरूरतों को पूरा किया जा रहा है। अपने व्याख्यान में उन्होंने एक रोचक तथ्य बताते हुए कहा कि एक सामान्य व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में जितनी ऊर्जा की खपत करता है वह तीन अश्व-शक्ति के बराबर होता है। व्याख्यान के अंत में उन्होंने लघु मॉड्यूलर रिएक्टर (SMRs) एवं भारत मॉड्यूलर रिएक्टर (BMRs) के भविष्य पर भी चर्चा की।

इस पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री भास्करानंद झा,उप निदेशक (राजभाषा), भारी पानी बोर्ड के द्वारा किया गया। दोनों वक्ताओं का परिचय क्रमशः श्री धनेश परमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), पऊनिप एवं श्रीमती विद्याश्री, सहायक निदेशक (राजभाषा), ब्रिट द्वारा प्रस्तुत किया गया। अंत में श्री दिवाकर विक्रम सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), क्रय एवं भंडार निदेशालय द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

******